यकीन और दुआ नजर नहीं आती लेकिन नामुमकिन को मुमकिन बना देती है।
– अज्ञात

गंभीर संकट में अर्थव्यवस्था

अब यह प्रक्रिया समाप्ति पर पहुंच रही है तो वहां दूसरे पैकेज की मांग तेज हो गई है, हालांकि जीडीपी के आंकड़े वहां अपनी ही कहानी कह रहे हैं। इस संदर्भ में भारत का अनुभव भी ज्यादा अलग नहीं है।

संजय भट्ट

कोरोना वायरस के खिलाफ छिड़ी विश्वव्यापी जंग का सबसे गंभीर पहलू अब सामने आ रहा है। बीते सप्ताह जारी हुए जीडीपी आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल–जून तिमाही में पिछले साल की इसी अवधि के मुकाबले फ्रांस ने 13.8 फीसदी, जर्मनी ने 10.1 फीसदी, स्पेन ने 18.5 फीसदी और इटली ने 12.4 फीसदी की गिरावट दर्ज की। दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अमेरिका ने इस तिमाही में पिछले साल के मुकाबले 9.5 फीसदी की गिरावट देखी।

यह भीषण गिरावट साफ इशारा कर रही है कि सिर्फ ये गिनी–चुनी अर्थव्यवस्थाएं ही नहीं, पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था गंभीर संकट में पड़ गई है। लॉकडाउन भले इस संकट की शुरुआत का कारण बना हो, पर इसका उठाया जाना संकट का अंत नहीं साबित हो रहा। विभिन्न देशों में अनलॉक की प्रक्रिया शुरू किए जाने के बावजूद जिंदगी की पुरानी रौनक कहीं भी वापस नहीं लौटी है।

ऐसे में आर्थिक गतिविधियों का जाम हो चुका चक्का भी पुरानी रफ्तार नहीं हासिल कर पा रहा है, हालांकि इसके लिए कोशिशें पूरी की जा रही हैं। मई से ही की जा रही आर्थिक पैकेजों की घोषणा इन कोशिशों की धुरी है। यूरोपियन यूनियन ने अभी हाल में 750 अरब यूरो (878 अरब डॉलर) का रिकवरी फंड बनाने का फैसला किया है। इसका कैसा उपयोग होता है और आर्थिक हलचलों पर इसका क्या असर होता है, यह देखना होगा। लेकिन अमेरिका में इससे कोई खास फायदा नहीं हुआ है। वहां 3 लाख करोड़ डॉलर का आर्थिक पैकेज दिया जा चुका है, जिसका एक हिस्सा कंपनियों के खाते में इस मकसद से गया कि वे कर्मचारियों की छंटनी न करें तो दूसरा हिस्सा दसियों लाख बेरोजगारों को हर हफ्ते 600 डॉलर की सहायता देने में खर्च किया गया।

अब यह प्रक्रिया समाप्ति पर पहुंच रही है तो वहां दूसरे पैकेज की मांग तेज हो गई है, हालांकि जीडीपी के आंकड़े वहां अपनी ही कहानी कह रहे हैं। इस संदर्भ में भारत का अनुभव भी ज्यादा अलग नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा घोषित किया गया 20 लाख करोड़ का विशाल पैकेज कहां खर्च हुआ और उसका कितना फायदा हुआ, इसका हिसाब अभी आना बाकी है। यहां भी पिछले हफ्ते सीआईआई की बैठक में उद्योग जगत की ओर से लोन रीस्ट्रक्चर किए जाने की मांग मजबूती से उठाई जा चुकी है। पैकेज का ठोस और पॉजिटिव असर अगर कहीं दिखता है तो चीन में, जहां मई महीने में अपेक्षाकृत छोटा पैकेज (जीडीपी का महज 4.6 फीसदी) घोषित किया गया।

दिलचस्प है कि चीनी अर्थव्यवस्था ने पिछली तिमाही में क्लासिक वी शेप्ड रिकवरी की तरह नीचे से सीधे ऊपर जाने का रुझान दर्ज कराया। इस महत्वपूर्ण फर्क का सबसे बड़ा कारण यह है कि चीन ने कोरोना पर काबू पा लेने के बाद यह पैकेज घोषित किया, जिससे वहां आर्थिक गतिविधियां जोर पकड़ सकीं। लेकिन भारत और अमेरिका में वायरस से लड़ाई अभी खात्मे की ओर जाती नहीं दिख रही, लिहाजा हमें आर्थिक संसाधनों का इस्तेमाल सोच–समझकर करते हुए आगे बढ़ना होगा।

अपना ध्यान

अशोक वोहरा। जरा सोचिये तो सही फोटोग्राफर भी आपका फोटो लेगा तो क्या कहेगा? वह आपसे कहेगा श्प्लीज कीप स्माइलिंगश या कृपया मुस्कराईये। आपसे बार–बार बोलता है वह फोटोग्राफर। वह क्यों ऐसा कहता है? क्योंकि वह जानता है कि जितना आप मुस्कुराएँगे, आपका चेहरा उतना ही अच्छा लगेगा। दूसरी तरफ अगर आपके चेहरे पर गुस्सा है तो? अरे भाई! आपकी फोटो अच्छी नहीं आएगी। लेकिन जैसे ही आप मुस्कुराएँगे और वह आपकी फोटो खींच देगा, वह भी मुस्करा पड़ेगा और आप भी खिल उठेंगे।

फोटोग्राफर जानता है कि आपके माथे पर शीतलता आते ही आपका चेहरा फोटो खींचने लायक हो जाएगा। जैसे ही आप मुस्कुराएँगे, वैसे ही अपने स्वरूप में आ जाएँगे। मुस्कराना वास्तव में प्रकृति है और उदासी में अथवा क्रोध में रहना विकृति।

संपादकीय

सनातन, शाश्वत, एकजुट

हमें धर्म का पालन करना होगा। जो हमारी सभ्यता के साथ हुआ, वह हमें सच–सच कहना होगा, लेकिन बिना नफरत के। हमें समझना होगा कि आधुनिक दौर के पहले के यूरोपीय लोगों, तुर्कों और दूसरे विदेशी हमलावरों ने जो किया, उससे आज के भारतीय मुसलमानों और ईसाइयों का कोई लेना–देना नहीं है। हमें एकजुट होकर, एक–दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना के साथ अपने मंदिरों और विहारों को दोबारा बनाना होगा। उनको हमें केवल पूजास्थलों के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान और सामाजिक समरसता के केंद्र के रूप में विकसित करना चाहिए, जैसे वे प्राचीन काल में थे। यह पुनर्निर्माण एक पूरी सभ्यता से जुड़ी जिम्मेदारी है। अपने पूर्वजों और आने वाली पीढ़ियों के प्रति यह दायित्व हमें निभाना है। हमारे साथ जो हुआ वह कोई अलग बात नहीं थी। दुनिया में लगभग हर प्राचीन संस्कृति के साथ ऐसा ही हुआ। लेकिन खास बात यह है कि हमने अपना अस्तित्व बनाए रखा। कैसे और क्यों? इसका एक प्रमुख कारण यह है कि हमारे पूर्वजों ने आत्मसमर्पण नहीं किया। मुझे याद आ रही है बैरन मैकाले की एक शानदार पंक्ति।

वही मैकाले जिनका नाम सुनकर भारत में कुछ लोग नाक–भौं सिकोड़ने लगते हैं। उन्होंने लिखा था, 'अपने पूर्वजों की अस्थियों और अपने देवताओं के मंदिरों के लिए मर–मिटने से बेहतर और क्या तरीका हो सकता है जान देने का!' हमारे पूर्वजों ने यही किया। पुनर्निर्माण का जिम्मा हमारा है लेकिन हमें याद रखना होगा कि पुनर्निर्माण करते हुए हमें अपने पूर्वजों का या उनकी जीवन शैली का अपमान नहीं करना है। ये दुनिया को हमारा संदेश है कि हम नष्ट नहीं होंगे, हम सनतान हैं, हम शाश्वत हैं और सबसे अहम बात यह कि हम एकजुट हैं। हम सभी 130 करोड़ लोग।

इस्तांबुल में हागिया सोफिया म्यूजियम को हाल में फिर से मस्जिद बना दिया गया। तुर्की गणराज्य के संस्थापक कमाल अतातुर्क ने 1935 में सेक्युलरिज्म की राह पकड़ी थी और इसे म्यूजियम बना दिया था।

प्रार्थना की हूक

अमीश त्रिपाठी।

अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर दोबारा बनने जा रहा है। इस बीच, दुनिया के एक दूसरे हिस्से से आई खबर ने मेरा ध्यान खींचा है। इस्तांबुल में हागिया सोफिया म्यूजियम को हाल में फिर से मस्जिद बना दिया गया। यह तुर्की की सबसे बड़ी अदालत का फैसला था। तुर्की गणराज्य के संस्थापक कमाल अतातुर्क ने 1935 में सेक्युलरिज्म की राह पकड़ी थी और इसे म्यूजियम बना दिया था। लेकिन अदालत ने उनका निर्णय पलट दिया। दो साल पहले मैं तुर्की गया था। मुझे तभी लगा था कि वहां के लोगों के लिए यह भावनात्मक मुद्दा है। वे अपनी पवित्र जगह पर एक बार फिर इबादत करने को बेकरार थे। वहां के अधिकतर लोगों की नजर में म्यूजियम को फिर से मस्जिद बनाना बिल्कुल सही है, लेकिन मुझे ग्रीक ऑर्थोडॉक्स ईसाइयों का दर्द भी समझ में आ रहा है।

हागिया सोफिया बहुत पहले चर्च था। 1453 में तुर्कों ने कुंस्तुनतूनिया फतह कर लिया। वही कुंस्तुनतूनिया, जो करीब एक हजार साल से ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च का मरकज था। तुर्कों ने उसका नामोनिशान मिटा दिया। बसाया एक नया शहर इस्तांबुल और हागिया सोफिया चर्च को मस्जिद बना दिया। तो क्या ग्रीक ऑर्थोडॉक्स

ईसाइयों के मन में वहां प्रार्थना करने की हूक नहीं उठती? कुछ समय के लिए हागिया सोफिया एक रोमन कैथलिक चर्च भी था। ऐसे में क्या रोमन कैथलिक ईसाई भी वहां प्रार्थना नहीं करना चाहते होंगे? सबसे बड़ी विडंबना यह कि किसी को भी आदिम धर्म (पैगन) में विश्वास करने वालों के टेंपल का दर्द महसूस नहीं हो रहा। वह टेंपल, जिसकी बुनियाद पर 1500 साल पहले हागिया सोफिया को बनाया गया। दरअसल यूरोप में प्रचलित धर्मों से अलग आदिम धर्मों को मानने वाला अभी शायद ही कोई हो। तो जब कोई पैगन है ही नहीं तो उस ऐतिहासिक गलती का दर्द कौन महसूस करे?

पैगन एक निषेधात्मक शब्द है। इसका इस्तेमाल उनके लिए किया जाता है जो अब्राहमिक न हों। यानी जो इस्लाम, ईसाई या यहूदी धर्मों को न मानते हों। लोग भूल गए हैं कि एक समय पूरा विश्व ही 'पैगन' था। मूर्ति पूजक था, देवियों की पूजा करता था और प्रकृति उपासक था। उन लोगों के लिए कोई एक सच नहीं था। वे दिव्यता के कई रूपों के साथ सहज थे। यहां तक कि नास्तिक भी उनमें शामिल थे। लेकिन वे सारी संस्कृतियां नष्ट कर दी गईं। अधिकतर को खून–खराबे के जरिए मिटाया गया। दूसरों के ध र्म परिवर्तन के जरिए अपना विस्तार करने में यहूदी धर्म की दिलचस्पी ना के बराबर थी। लेकिन ईसाइयों और मुसलमानों ने आदिम धर्मों पर विश्वास रखने वालों पर बेइंतहा जुल्म किए, उनका नरसंहार किया।

कैथरीन निक्सी की 'द डार्केनिंग एज' सहित कई किताबों में इसका दुखद वर्णन है। हालांकि यह बात भी पुरजोर तरीके से कही जानी चाहिए कि सभी ईसाइयों या मुसलमानों ने पैगन लोगों पर अत्याचार नहीं किए। कुछ समूह थे, जिन्होंने मार–काट की। इनमें सबसे आगे थे यूरोप के ईसाई और तुर्किक मुसलमान। यह हिंसक विस्तारवादी रुझान अफ्रीकी ईसाइयों और इंडोनेशिया के मुसलमानों में नदारद था। लेकिन यह भी है कि यूरोप और तुर्की के अभी के लोगों का उनके पूर्वजों के कृत्य से कोई लेना–देना नहीं है। इतिहास की यह बात हम भारतीयों के लिए क्यों अहम है? इसलिए कि हम उन कुछ 'सनातन संस्कृतियों' में से हैं, जिनका अस्तित्व खत्म नहीं हुआ।

अष्टयोग- 5136

		3				7
2	31		31		28	2
	2	1		3		4
3	34	6	31		33	
	5		3	2		1
5	31	5	32	7	38	3
			4			6

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5135 का हल

3	1	7	6	2	5	4
5	31	3	37	1	28	7
4	3	5	7	6	1	2
2	29	6	40	7	34	3
1	6	2	4	3	7	5
7	32	4	26	5	34	1
6	5	1	3	4	2	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

एकमात्र सभ्यता हमारी

मोहन। कांस्य युग के पहले की एकमात्र सभ्यता हमारी है, जो निरंतर चली आ रही है। चीन भी 'पैगन कल्चर' है लेकिन वह कांस्य युग के पहले की सभ्यता नहीं है। जो कुछ दूसरे आदिम धर्मों पर विश्वास करने वालों पर गुजरी, उसे हमने भी सहा। 1000 ईसवी से लगातार हमले हुए। पहले तुर्कों के कई कबीलों के हमले, फिर यूरोप के साम्राज्यवादियों के। उन विदेशी हमलावरों ने हजारों मंदिर ध्वस्त किए और वहीं पर मस्जिदें या चर्च बनाए गए, कभी–कभी तो गिराए गए मंदिर के अवशेषों से ही। सीताराम गोयल ने अपनी किताब 'हिंदू टेंपल्सरू व्हाट हैपेंड टु देम' में ऐसे कई उदाहरण दर्ज किए हैं। दसियों विश्वविद्यालयों को जलाकर राख कर दिया गया। कई सदियों में करोड़ों लोगों को कत्ल किया गया।